पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

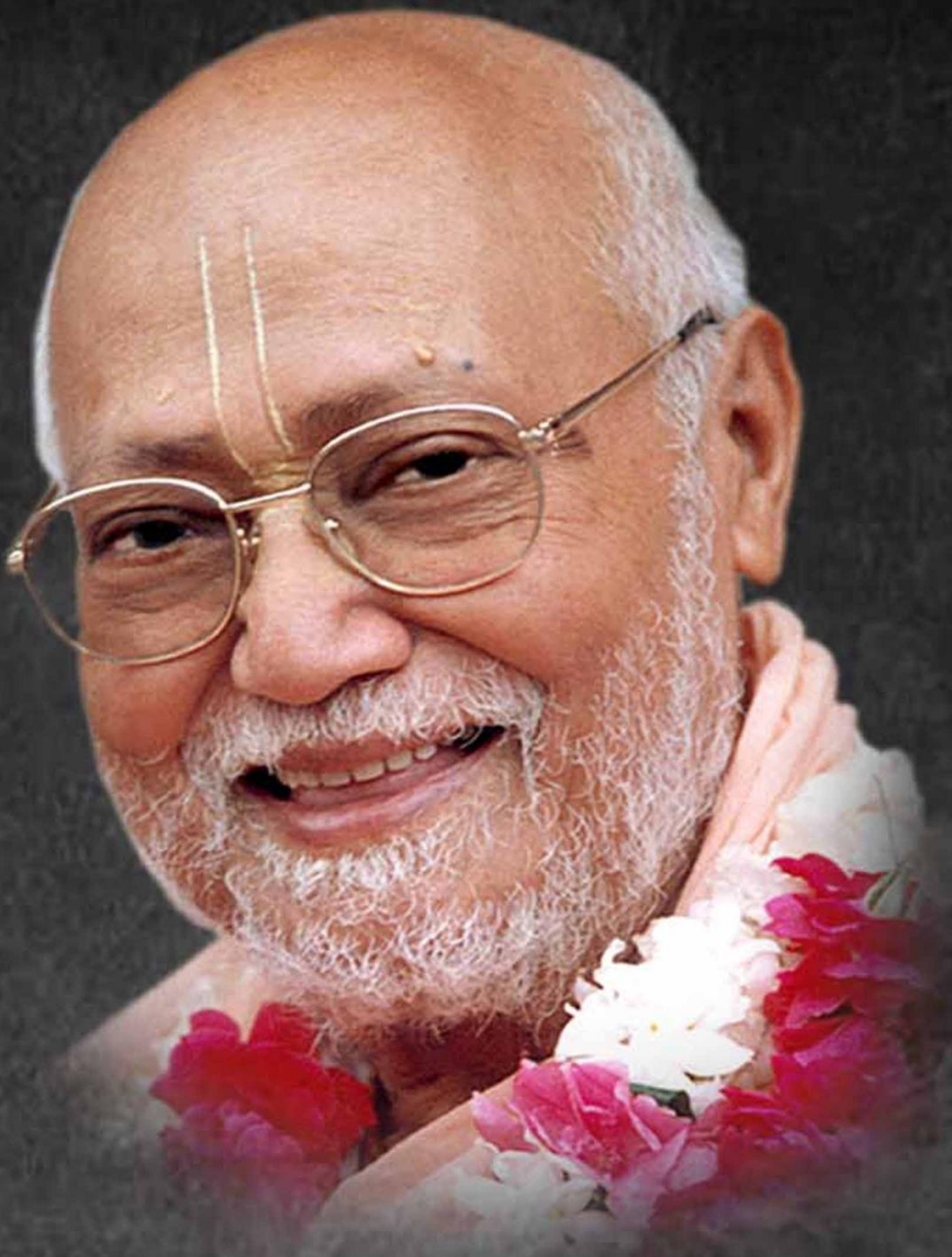

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 19

श्रीनवद्वीप धाम - परिक्रमा तथा श्रीगौर-जन्मोत्सवः

श्रीलगुरुदेव

9 मार्च शनिवार से 17 मार्च रविवार 1957 तक श्रील गुरुदेव जी की सेवा अध्यक्षता में महासमारोह के रूप में सुसम्पन्न हुआ। विद्यानगर निवासी श्री गयाराम दास महाशय के सौजन्य से विद्यानगर स्थित गयाराम दास विद्यामन्दिर में नवद्वीपधाम-दर्शन और परिक्रमा के लिये आये यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था हुई थी। श्रील गुरुदेव जी के सेवानियामत्व में इस प्रकार से प्रतिवर्ष ही उनके प्रकट के समय श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान स्थित

मूल श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में श्रीनवद्वीपधामपरिक्रमा और गौर-जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में नौ दिवसीय विराट धर्मानुष्ठान आयोजन हुआ करता था।

1959 में श्रील गुरुदेव जी ने श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान में श्रीभक्ति सिद्धान्त सरस्वती प्राथमिक विद्यालय एवं संस्कृति शिक्षा प्रसार के लिये "श्रीगौड़ीय संस्कृत विद्यापीठ" की स्थापना की। डा. एस. एन. घोष श्रीगौड़ीय संस्कृत विद्यापीठ के सैक्रेटरी एवं श्रीलोकनाथ ब्रह्मचारी, काव्य-

व्याकरण-पुराणतीर्थ अध्यापक के रूप में नियुक्त हुये।

सन् 1961 में श्रील गुरुदेव जी की सेवा अध्यक्षता में 16 - कोसी श्रीनवद्वीपधाम परिक्रमा, नौ शिखरों वाले विशाल श्रीमन्दिर प्रतिष्ठाउत्सव तथा श्रीगौराविर्भाव महोत्सव मनाया गया । इसी उपलक्ष्य में श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान स्थित मूल श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में 22 फरवरी बुधवार से 3 मार्च शुक्रवार तक दस दिवसीय विशाल धर्मानुष्ठान का आयोजन हुआ। 24 फरवरी शुक्रवार को

श्रीमन्दिर के शिखर में ध्वजा और चक्र स्थापन, श्रीमन्दिर प्रतिष्ठा कार्य एवं श्रीगुरु-गौरांग - राधा मदनमोहन जी विग्रहों ने नये श्रीमन्दिर में प्रवेश किया । यह अनुष्ठान पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति गौरव वैखानस महाराज जी के पौरोहित्य में संकीर्त्तन के साथ सुसम्पन्न हुआ। परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति रक्षक श्रीधर देव गोस्वामी महाराज जी ने श्रीमन्दिर के द्वार का उद्घाटन किया। इस विराट् अनुष्ठान में श्रील गुरुदेव के गुरुभाइयों में उपस्थित

थेपूर्वोल्लिखित दो गुरु भाइयों के इलावा परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रकाश अरण्य महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति सर्वस्व गिरि महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विचार यायावर महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति कमल मधुसूदन महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सौध आश्रम महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विलास

भारती महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सागर महाराज, श्रीमद् कृष्णदास बाबाजी महाराज, श्रीमद् नारायण चन्द्र मुखोपाध्याय, श्रीमद् भवतारण ब्रह्मचारी, श्रीमद् कृष्णकेशव ब्रह्मचारी, श्रीमद् नरोत्तमानन्द दासाधिकारी व श्रीमद् शुद्ध भक्तिचरण दासाधिकारी आदि बहुत से विशिष्ट पूजनीय त्रिदण्डियति और वैष्णववृन्द | मठ में नौ - शिखर वाले नव-मन्दिर निर्माण के बाद श्रीमठ के एक कमरे में प्रतिष्ठित अधिष्ठातृ विग्रह-गणों के नये बने मन्दिर में प्रवेश की विजय यात्रा के

समय दर्शानार्थी नर-नारियों में महानन्द की बाढ़ सी आ गई। विचित्र प्रकार के वाद्य, उच्च-संकीर्त्तन और नारियों की जय-जयकार ध्वनि से समस्त आकाश गूंज उठा। श्रीमन्दिर की परिक्रमा के समय परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति रक्षक श्रीधर देव गोस्वामी महाराज जी के 'हरि बल्वो आर मदनमोहन हेरिव गो' - इस पद्य के आवेग से कीर्त्तन और नृत्य करते रहने से भक्तों ने भी महानन्द से उदण्ड-नृत्य के साथ उक्त पद्य का उच्चारण किया। दोपहर में भोगराग के पश्चात् एकत्रित हज़ारों की संख्या में नर-

नारियों का विचित्र महाप्रसाद के द्वारा सम्मान किया गया | सन्ध्या की धर्म-सभा के विशेष अधिवेशन में श्रील गुरुदेव जी ने अभिभाषण दिया। उनके गुरुभाइयों में से भी पूज्यपाद श्रीमद्भक्ति सर्वस्व गिरि महाराज जी और पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज जी ने प्रवचन दिया 18 फाल्गुन वृहस्पतिवार श्रीगौराविर्भाव तिथि पर सभामण्डप में वार्षिक धर्म सभा के अधिवेशन में पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, डाक्टर श्रीप्रफुल्ल चन्द्र घोष सभापति के पद पर आसीन हुये थे। इस सभा में

श्रील गुरुदेव जी ने अपने सारगर्भित भाषण में "गौरतत्त्व और उनके अवदान- वैशिष्ट्य" के " सम्बन्ध में शास्त्रयुक्ति अनुसार समझाकर बताया।

धर्मसभा के विशेष अधिवेशन में जिन्होंने योगदान दिया, वे हैंपरिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति गौरव वैखानस महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रकाश अरण्य महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्त्यालोक परमहंस महाराज, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि

स्वामी श्रीमद् भक्ति विलास भारती महाराज, डा. एस. एन. घोष, श्रीमणिकण्ठ मुखोपाध्याय, भक्तिभूषण, श्रीसत्येन्द्र नाथ वन्द्योपाध्याय, श्रीपूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय, श्रीसुदेव दत्त व धनबाद के श्रीसुरेश चन्द्र सिंह।

श्रील गुरुदेव जी के श्रीचरणाश्रित निष्ठावान गृहस्थ शिष्य श्रीचैतन्यचरण दासाधिकारी (पूर्वनाम श्री चूनीलाल दत्त - आसाम के तेजपुर निवासी) श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान के इस नौ-शिखरों वाले विशाल श्रीमन्दिर के

निर्माण में पूरी सेवा देकर श्रील गुरुदेव जी के प्रचुर आशीर्वाद के भाजन हुये। बाद में धीरे-धीरे उन्होंने ईशोद्यान में विशाल नाट्य सत्संग भवन एवं श्रील गुरुदेव जी के रहने के लिए कमरे भी बनवाये। श्रीगुरु, वैष्णव और भगवान् की सेवा में उन्होंने प्राण, धन, बुद्धि व वाक्य आदि सभी को लगाकर गृहस्थ भक्त का आदर्श प्रस्तुत किया व मायापुर में एक कुटिया का निर्माण करके वहाँ अवस्थान करते हुये भजन का आदर्श भी प्रदर्शन किया।

कोलकाता विडन-स्ट्रीट पर रहने वाले धार्मिक प्रवर श्रीपरेश चन्द्र राय जी ने श्रीमायापुर मठ की सेवा जैसे ठीक प्रकार से चल सके, उसके लिए अपनी खेती की ज़मीन देकर श्रील गुरुदेव जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सन् 1956 से सन् 1961 तक श्रील गुरुदेव जी ने प्रचार पार्टी के साथ उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों (कानपुर, जयपुर, हरिद्वार, जगाधरी, लुधियाना, जालन्धर) पर श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की वाणी का बड़े ज़ोरज़ोर से प्रचार किया था।

सन् 1962 में श्रीगौरपूर्णिमा तिथि पर श्रीधाम मायापुर-ईशांद्यान में श्रील गुरुदेव जी ने श्रीचैतन्य वाणी-प्रचारिणीसभा की स्थापना की। स्वयं सभा के सभापति के रूप से मठवासियों, गृहस्थ-भक्तों और सज्जनों को श्रीचैतन्यवाणी के प्रचार में सहायता करने के कारण श्रील गुरुदेव जी ने गौराशीर्वाद प्रदान किया।

सन् 1963 में, श्रीवृन्दावन धाम में उत्थान एकादशी तिथि पर श्रील गुरुदेव जी ने अपनी आविर्भाव तिथि- पूजा पर अपने आश्रित

शिष्यों के आत्यन्तिक मंगल के लिये जो उपदेश प्रदान किया, वह प्रसंगतः विशेष भाव से ध्यान देने व जीवन में ढालने योग्य है।

उपदेश का सारांश - "आप सब जागतिक मोह और आकर्षण के पात्रपिता, माता, रिश्तेदार व बान्धवों आदि को भी छोड़कर श्रीकृष्ण की करुणा से आकर्षित होकर एकमात्र उनके श्रीचरणकमलों की सेवा में रहने के अभिप्राय से अनेक क्लेश स्वीकार कर रहे हैं तथा साथ ही साथ हमारे अभीष्टदेव श्रील प्रभुपाद जी के

मनोभीष्ट को पूरा करने में सहायता करके मुझे कृतार्थ कर रहे हैं। इसलिये मैं श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के आश्रित सभी भक्तों के पास चिरकृतज्ञ हूँ। मैं अपने नित्य प्रभु की महिमा के श्रवण-कीर्त्तन की अभिलाषा में डूबा हुआ था । भक्तवत्सल श्रील प्रभुपाद जी ने करुणा परवश होकर मुझे यह सुयोग देने के लिये बन्धु के रूप में मेरी सहायता करने के लिए अपने नित्य-किंकरों को भेजा । श्रील गुरुदेव जी ने अपने जनों को मेरे श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में भेजकर मुझे कृतार्थ किया है। श्रीचैतन्य

गौड़ीय मठ के मठवासी मेरे श्रीगुरुदेव जी की ही करुणाशक्ति के विग्रहरूप से प्रकाशित हुये हैं । उनकी सेवा को ही मैं अपना धर्म समझता हूँ तथा इसे अपने श्रीगुरुदेव की सेवा का ही अंग मानता हूँ। मेरे जन्म दिन पर मेरे श्रीगुरुदेव जी के वैभवगण के स्मृति पथ पर मेरा स्थान होने के कारण मेरा भविष्य शुभ सूचना दे रहा है। वैष्णवों को मर्यादा देने वाले भक्त ही शुद्ध-वैष्णव संज्ञा से संज्ञित हैं। जो केवलमात्र श्रीहरि के अर्चाविग्रह की श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं, सभी देवताओं को परमेश्वर मानने के भ्रम

से जो मुक्त हो गये हैं परन्तु वैष्णव-पूजा में उनका उत्साह नहीं होता, ऐसे व्यक्तियों को कनिष्ठ वैष्णव या प्राकृत वैष्णव कहा जाता है। परतत्त्व श्रीहरि को प्रसन्न करने में अति-उत्सुक किन्तु साक्षात् रूप से उनके स्वरूप का संग न पाकर उनकी प्रीति के उद्देश्य से उनके श्रीअर्चाविग्रह की आदर के साथ सेवा करने वाले व्यक्ति भक्ति प्रकृति में प्रविष्ट होने के कारण प्राकृतभक्त या कनिष्ठ - वैष्णव के रूप से सम्मानित होते हैं। इन कनिष्ठ वैष्णवों की अपेक्षा जो उन्नत भक्त हैं वे श्रीहरि के वैभव-स्वरूप वैष्णवों

में भगवान् का साक्षात् अधिष्ठान मानकर वैष्णव पूजा में आसक्त रहते हैं “तस्मात परतरं देवि तदीयानां समर्चनम्”॥

प्राकृत - जड़ता प्रबल रहने से तथा दम्भ और मत्सरता के रूप में प्रकट होने पर वैष्णव-पूजन सम्भव नहीं होता। अप्रकटित वैष्णवों की पूजा कभी-कभी तो दाम्भिक लोग भी कर लेते हैं, किन्तु मनुष्य रूपधारी प्रकट वैष्णवों अथवा भगवत्पार्षदों की पूजा मत्सरता के कारण उनके लिए करनी सम्भव नहीं होती। कर्मजड़ स्मार्तगण मन्त्रों

के द्वारा श्रीविष्णु का पूजन या श्रीशालग्रामादि का अर्चन करते हैं, किन्तु जब श्रीविष्णु, जीवों पर साक्षात् रूप से कृपा करने के लिये बाहर में मनुष्य रूप धारण कर जगत में अवतीर्ण होते हैं तो एकमात्र निष्किंचन भक्तों के इलावा महा-महापण्डितगण भी उनकी साक्षात् सेवा-पूजा से वन्चित होते हैं। मायिक जड़ता या जड़ प्रतिष्ठा की आकांक्षा ही इस भाव से वन्चित होने का कारण है।

शरणागति के बिना किसी भी बद्ध जीव के लिए माया की इस

पहेली को सुलझाना सम्भव नहीं है। हमारे शरण्य - श्रीगुरुदेव, श्रीभगवान् के आश्रय - जातीय विष्णु-तत्त्व होने के कारण सेव्य-सेवक रूप से प्रकट रहकर हमारी सेवा ग्रहण करके व हमें उपदेश देकर कृतार्थ करते रहते हैं। यदि हम कोई बुरा उद्देश्य लेकर उनके पास न जायें तो ये निश्चित है कि उनकी करुणामयी इच्छा के कारण ही उनके विशुद्ध चिन्मय स्वरूप के दर्शन प्राप्त करके कृतार्थ हो जायेंगे। हमारे अधिकार के तारतम्यानुसार वे हमें विभिन्न रसोचित सेवा का सुयोग प्रदान करते हैं। सेवकवत्सल

जगद्गुरु श्रील प्रभुपाद अपने नित्यकिंकरों को व किकंरों के भी किंकर बनने की भावना रखने वालों को तमाम प्रकार के अशुभ के चंगुल से निकालकर अपनी अभीष्ट भगवद्- सेवा में नियुक्त करें, यही उनके श्रीचरणों में मेरी कातर प्रार्थना है"।

श्रील गुरुदेव जी की विशेष प्रेरणा से श्रीगौड़ीय संघपति, परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सारंग गोस्वामी महाराज जी ने श्रीधाम मायापुर

ईशोद्यान में स्थित श्रीगौड़ीय संघ के मुख्यालय (Head office) श्रीनन्दनाचार्य के भवन में 16 मार्च 1962 शुक्रवार को सुरम्य श्रीमन्दिर की प्रतिष्ठा एवं श्रीमन्दिर में श्रीगौर-नित्यानन्द विग्रहों को प्रकट करके भक्तों का उल्लास बढ़ाया। श्रील प्रभुपाद जी के प्रिय पार्षदों द्वारा श्रीगौरधाम के लुप्त तीर्थों के प्रकाश और श्रीमायापुर की बढ़ती सुन्दरता को देखकर, ईर्ष्यालु व्यक्ति तो नहीं, परन्तु हाँ, सज्जन व्यक्ति अपने हृदय में आनन्द का अनुभव करेंगे।

श्रीलगुरुदेव